{ पुणरवि मारणान्तियसमुग्घादेण समुहदो तिण्णि विग्गहकंडयाणि कादूण।।११।। }

< फिर भी जो तीन विग्रह करके मारणान्तिक समुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ है।।११।। >

{ महामच्छो लोगणालीए वायव्वदिसाए पुव्ववेरियदेवसंबंधेण दक्खिणुत्तरायामेण पदिदो। तत्थ मारणंतियसमुग्घादेण समुहदो। तेण महामच्छेण वेयणसमुग्घादेण मारणंतियसमुग्घादं करंतेण तिण्णि विग्गहकंडयाणि कदाणि। विग्गहो णाम वक्कत्तं, तेण तिण्णि कंडयाणि कदाणि। तं जहा -- लोगणालीवायव्वदिसादो कंडुज्जुवाए गईए सादिरेयअद्धरज्जूमेत्तमागदो दक्खिणदिसाए तमेगं कंडयं। पुणो तत्तो वलिदूण कंडुज्जुवाए गईए एगरज्जुमेत्तं पुव्वदिसमागदो ** (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का प्रत्योः 'पुव्वदिसावसमागदो', ता प्रतौ 'पुव्वदिसाव (ए)समागदो' इति पाठः।) तं बिदियं कंडयं। पुणो तत्तो वलिदूण अधो छरज्जुमेत्तद्धाणमुजुगदीए गदो। तं तदियं कंडयं। एवं तिण्णि कंडयाणि ** (म प्रतिपाठोऽयम्। अ-का प्रत्योः 'तं तदियकंडयाणि', ता प्रतौ 'तं तदियकंड(यं)। या (ता) णि ' इति पाठः।) कादूण मारणंतियसमुग्घादं गदो। चत्तारि कंडए किण्ण कराविदो? ण, तसेसु दो विग्गहे मोत्तूण तिण्णिविग्गहाणमभावादो। तं कधं णव्वदे? एदम्हादो एव सुत्तादो। }

< महामत्स्य लोकनालीकी वायव्य दिशामें पूर्वके वैरी देवके सम्बन्धसे दक्षिण-उत्तर आयाम स्वरूपसे गिरा। वहाँ वह मारणान्तिक समुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त हुआ। वेदना समुद्घातके साथ मारणान्तिक समुद्घातको करनेवाले उक्त महामत्स्यने तीन विग्रहकाण्डक किये। विग्रहका अर्थ वक्रता है, उससे तीन काण्डक किये। वे इस प्रकारसे -- लोकनालीकी वायव्य दिशासे बाणके समान ऋजुगतिसे साधिक अर्ध राजु मात्र दक्षिण दिशामें आया। वह एक काण्डक हुआ। फिर वहाँसे मुड़कर बाण जैसी सीधी गतिसे एक राजू मात्र पूर्व दिशामें आया। वह द्वितीय काण्डक हुआ। फिर वहाँसे मुड़कर नीचे छह राजु मात्र मार्गमें ऋजुगतिसे गया। इस प्रकार तीन काण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुआ।

शंका -- चार काण्डकोंको क्यों नहीं करता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, त्रसोंमें दो विग्रहोंको छोड़कर तीन विग्रह नहीं होते।

शंका -- वह कैसे ज्ञात होता है?

समाधान -- वह इसी सूत्रसे ज्ञात होता है। >

{ से काले अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उप्पज्जहिदि त्ति तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो उक्करस्सा। १२।। }

< अनन्तर समयमें वह सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होगा, अतः उसके ज्ञ ाानावरणीयवेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है। ।।१२।। >

{ सत्तमपुढविं मोत्तूण हेट्ठा णिगोदेसु सत्तरज्जुमेत्तद्धाणं गंतूण किण्ण उप्पाइदो? णिगोदेसुप्पज्जमाणस्स अइतिव्ववेयणाभावेण सरीरतिगुणवेयणसमुग्घादस्स अभावादो। जदि एवं तो पुव्विल्लविक्खंभुस्सेहेहिंतो वेयणाए जहा विक्खंभुस्सेहा दुगुणा होंति तहा कादूण णिगोदेसु किण्ण उप्पाइदो? ण, वड्ढिदखेत्तादो परिहीणखेत्तस्स सादिरेयअट्ठगुणत्तुवलंभादो। जदि वि वारुणदिसादो एकरज्जुमेत्तं पुव्वदिसाए गंतूण पुणो हेट्ठा सत्तरज्जुअद्धाणं गंतूण पुणो दक्खिणेण आहुट्ठरज्जुओ गंतूण सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जदि तो वि पुव्विल्लखेत्तादो एदस्स खेत्तं विसेसहीणं चेव, विक्खंभुस्सेहाणं तिगुणत्ताभावादो। सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणस्स महामच्छस्स विक्खंभुस्सेहा तिगुणा ण होंति, दुगुणा विसेसाहिया वा होंति त्ति कधं णव्वदे? अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु से काले उप्पज्जिहिदि त्ति सुत्तादो णव्वदे। संतकम्मपाहुडे पुण णिगोदेसु उप्पाइदो, णेरइएसु उप्पज्जमाणमहामच्छो व्व सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणमहामच्छो वि तिगुणसरीरबाहल्लेण मारणंतियसमुग्घादं गच्छदि त्ति। ण च एदं जुज्जदे, सत्तमपुढविणेरइएसु असादबहुलेसु उप्पज्जमाणमहामच्छवेयणाकसाएहिंतो सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणमहामच्छवेयण-कसायाणं सरिसत्ताणुववत्तीदो। तदो एसो चेव अत्थो पहाणो त्ति घेत्तव्वो। 'लोगणालीए अंते सत्तमपुढवीए सेडिबद्धो अत्थि त्ति' एदेण सुत्तेण णव्वदे, अण्णहा तिण्णि विग्गहप्पसंगादो। से काले उप्पज्जिहिदि ** (अ प्रतौ 'उप्पज्जदि', ता प्रतौ 'उप्पज्जहिदि'

इति पाठः।) त्ति किमट्ठं उच्चदे? ण, णेरइएसुप्पण्णपढमसमए उवसंहरिदपढमदंडयस्स य उक्कस्सखेत्ताणुववत्तीदो। एत्थ संदिट्ठी
सादिरेयमद्धट्ठरज्जुपमाणं ** (ता प्रतौ 'सादिरेयमद्धयरज्जुपमाणं' इति पाठः।)के वि आइरिया एवं होदि **(प्रतिषु 'होंति' इति पाठः।) त्ति भणंति। तं जहा -- अवरदिसाए मारणंतियसमुग्घादं कादूण पुव्वदिसमागदो जाव लोगणालीए अंतं पत्तो त्ति। पुणो विग्गहं करिय हेट्ठा छरज्जुपमाणं गंतूण पुणरवि विग्गहं करिय वारुणदिसाए अद्धरज्जुपमाणं गंतूण अवहिट्ठाणम्मि उप्पण्णस्स उक्कस्सं खेत्तं होदि त्ति। एदं ण घडदे, उववादट्ठाणं वोलेदूण गमणं णत्थि त्ति पवाइज्जंतउवदेसेण सिद्धत्तादो। }

< शंका -- सातवीं पृथिवीको छोड़कर नीचे सात राजू मात्र अध्वान जाकर निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके अतिशय तीव्र वेदनाका अभाव होनेसे विवक्षित शरीरसे तिगुणा वेदनासमुद्घात सम्भव नहीं है।

शंका -- यदि ऐसा है तो वेदनासमुद्घातमें पूर्वोक्त विष्कम्भ और उत्सेधसे जिस प्रकार दुगुणा विष्कम्भ व उत्सेध होता है वैसा करके निगोद जीवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उसके वृद्धिंगत क्षेत्रकी अपेक्षा हानिको प्राप्त साधिक आठगुणा पाया जाता है।

यद्यपि पश्चिम दिशासे एक राजू मात्र पूर्व दिशामें जाकर, फिर नीचे सात राजू अध्वान जाकर, फिर दक्षिणसे साढ़ेतीन राजू जाकर सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होता है तो भी पूर्वके क्षेत्रसे इसका क्षेत्र विशेष हीन ही है, क्योंकि, इसमें विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणे नहीं हैं।

शंका -- सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यका विष्कम्भ और उत्सेध तिगुणा नहीं होता, किंतु दुगुणा अथवा विशेष अधिक होता है; यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- 'नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें वह अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा' इस सूत्रसे जाना जाता है।

सत्कर्मप्राभृतमें उसे निगोद जीवोंमें उत्पन्न कराया गया है, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके समान सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाला महामत्स्य भी विवक्षित

शरीरकी अपेक्षा तिगुणे बाहल्यसे मारणान्तिकसमुद्‌घातको प्राप्त होता है। परन्तु वह योग्य नहीं है, क्योंकि, अत्यधिक असाताका अनुभव करनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषायकी अपेक्षश्रा सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यकी वेदना और कषाय सदृश नहीं हो सकती। इस कारण यही अर्थ प्रधान है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए। "लोकनालीके अन्तमें सातवीं पृथिवीका श्रेणिबद्ध है" इस सूत्रसे जाना जाता है, क्योंकि इसके विना तीन विग्रहोंका प्रसंग आता है।

शंका -- अनन्तर कालमें उत्पन्न होगा, यह किसलिये कहते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, नारकियोंमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें प्रथम दण्डका उपसंहार होनेसे उसका उत्कृष्ट क्षेत्र नहीं बन सकता।

यहाँ संदृष्टि -- (मूलमें देखिये।)

साधिक साढ़े सात राजुका प्रमाण इस (निम्न) प्रकार होता है, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। यथा -- "पश्चिम दिशासे मारणान्तिकसमुद्‌घातको करके लोकनालीका अन्त प्राप्त होनेतक पूर्व दिशामें आया। फिर विग्रह करके नीचे छह राजु मात्र जाकर पुनः विग्रह करके पश्चिम दिशामें आधे राजु प्रमाण जाकर अवधिस्थान नरकमें उत्पन्न होनेपर उसका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है। किन्तु यह घटित नहीं होता, क्योंकि, 'उपपादस्थानका अतिक्रमण करके गमन नहीं होता' इस परम्परागत उपदेशसे सिद्ध है। >

{ एत्थ उवसंहारो उच्चदे। तं जहा -- एगरज्जुं ठविय सादिरेयअद्धट्ठमरूवेहि गुणेदूण पुणो तिगुणिदविक्खंभेण । १५०० । तिगुणिदउस्सेहगुणिदेण । ७५०। गुणिदे णाणावरणीयस्स उक्कस्सखेत्तं होदि। }

< यहाँ उपसंहार कहते हैं। वह इस प्रकार है -- एक राजुको स्थापित करके साधिक साढ़े सात रूपोंसे गुणित करके पश्चात् तिगुणे उत्सेध (२५० x ३ = ७५०) से गुणित तिगुणे विष्कम्भ (५०० x ३ = १५००) के द्वारा गुणित करनेपर ज्ञानावरणीयका उत्कृष्ट क्षेत्र होता है। >

{ तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा।।१३।। }

<	महामत्स्यके उपर्युक्त उत्कृष्ट क्षेत्रसे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना है। ।।१३।।>

{	उक्कस्समहामच्छक्खेत्तादो वदिरित्तं खेत्तं तव्वदिरित्तं णाम। सा अणुक्कस्सा खेत्तवेयणा। सा च असंखेज्जवियप्पा। तिस्से सामी किण्ण परूविदो? ण,उक्कस्सस्स सामी चेव अणुक्कस्सस्स वि सामी होदि त्ति पुधसामित्तपरूवणाकरणादो, सेसवियप्पाणं पि एदम्हादो चेव सिद्धीदो च। तं जहा -- मुहम्मि एगागासपदेसेणूणुक्कस्सोगाहणमहामच्छेण पुव्ववेरियदेवसंबंधेण लोगणालीए वायव्वदिसाए णिवदियवेयणसमुग्घादेण पुव्वविक्खंभुस्सेहेहिंतो तिगुणविक्खंभुस्सेहे आवण्णेण मारणंतियसमुग्घादेण तिण्णि कंडयाणि कादूण सत्तमपुढविं पत्तेण अणुक्कस्सुक्कस्सक्खेत्तं कदं। तेण एदस्स अणुक्कस्सुक्कस्सक्खेत्तस्स महामच्छो चेव सामी। पुणो मुहपदेसे दोहि आगासपदेसेहि ऊणओ महामच्छो वेयणसमुग्घादेण समुहदो होदूण तिण्णि विग्गहकंडयाणि कादूण मारणंतियसमुग्घादेण सत्तमपुढविं गदो बिदियअणुक्कस्सखेत्तस्स सामी होदि। पुणो तीहि आगासपदेसेहि परिहीणमुहो महामच्छो पुव्वविहिणा चेव मारणंतियसमुग्घादेण सत्तमपुढविं गदो तदियखेत्तस्स सामी। मुहम्मि चत्तारिआगासपदेसूणमहामच्छो मारणंतियसमुग्घादेण सादिरेयअद्धट्ठमरज्जुआयामादो चउत्थखेत्तस्स सामी।एवमेदेण कमेण महामच्छमुहपदेसे ऊणे करिय संखेजपदरंगुलमेत्ता अणुक्कस्सखेत्तवियप्पा उप्पादेयव्वा। }

<	उत्कृष्ट महामत्स्यक्षेत्रसे भिन्न क्षेत्र तद्व्यतिरिक्त है। वह अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदना है। वह असंख्यात विकल्प रूप है।

शंका -- उसके स्वामीकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गयी है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उत्कृष्टका स्वामी ही चूँकि अनुत्कृष्टका भी स्वामी होता है, अतः उसके स्वामित्वकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गयी है, तथा शेष विकल्प भी इसीसे सिद्ध होते हैं। यथा -- मुखमें एक प्रदेशसे हीन उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त, पूर्ववैरी देवके सम्बन्धसे लोकनालीकी वायव्य दिशामें गिरकर वेदनासमुद्घातसे पूर्व विष्कम्भ व उत्सेधकी अपेक्षा तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त, तथा मारणान्तिकसमुद्घातसे तीन काण्डकोंको करके सातवीं

पृथिवीको प्राप्त हुआ महामत्स्य अनुत्कृष्ट उत्कृष्ट क्षेत्रको करता है। इस कारण इस अनुत्कृष्ट क्षेत्रका महामत्स्य ही स्वामी है।

पुनः मुखप्रदेशमें दो आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य वेदनासमुद्‌घातसे समुद्‌घातको प्राप्त होकर तीन विग्रहकाण्डकोंको करके मारणान्तिकसमुद्‌घातसे सातवीं पृथिवीको प्राप्त होता हुआ द्वितीय अनुत्कृषअट क्षेत्रका स्वामी होता है। फिर तीन आकाशप्रदेशोंसे हीन मुखवाला महामत्स्य पूर्व विधिसे ही मारणान्तिकसमुद्‌घातसे सातवीं पृथिवीको प्राप्त होकर तृतीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है। मुखमें चार आकाशप्रदेशोंसे हीन महामत्स्य मारणान्तिकसमुद्‌घातसे साधिक साढ़े सात राजु मात्र आयामसे युक्त होता हुआ चतुर्थ अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है। इस प्रकार इस क्रमसे महामत्स्यके मुखप्रदेशोंको हीन करके संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण अनुत्कृष्ट क्षेत्रके विकल्पोंका उत्पन्न कराना चाहिये। >

{ एत्थत्तणसव्वपच्छिमखेत्तं केण सरिसं होदि त्ति वुत्ते उच्चदे -- ओघुक्कस्सोगाहणमहामच्छस्स वेयणसमुग्घादेण तिगुणविक्खंभुस्सेहे गंतूण पदेसूणद्धट्ठमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसं होदि। पुणो वि महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण पदेसूणद्धट्ठमरज्जूणं मारणांतियं मेल्लाविय संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणा कायव्वा। एत्थ अंतिमक्खेत्तवियप्पो केण सरिसो होदि त्ति उत्ते, उच्चदे -- ओघुक्कस्सोगाहणामहामच्छस्स पुव्वविहाणेण दुपदेसूणद्धट्ठमरज्जूण मुक्कमारणंतियस्स खेत्तेण सरिसो। पुणो एदं मारणंतियखेत्तायामं धुवं कादूण महामच्छमुहवियप्पे अस्सिदूण संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं। पुणो एत्थ सव्वपच्छिमवियप्पो तिपदेसूण **(ता प्रतौ 'वियप्पो त्ति पदेसूण' इति पाठः।) द्धट्ठमरज्जूणं मुक्कमारणंतियखेत्तेण सरिसो। एवमेगेगागासपदेसूणाओ कमेण मारणंतियं मेलाविय अणुक्कस्सखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं। सत्तमपुढविं मारणंतियं मेल्लमाणजीवाणं मारणंतियखेत्तायामो सव्वेसिं किं ण सरिसो? ण, मारणंतियं मेल्लिदूण ** (अ-का प्रत्योः 'मेल्लिदोण', ता प्रतौ 'मेल्लिदो ण' इति पाठः।) पुणो मूलसरीरं पविसिय कालं करेंताणं मारणंतियखेत्तायामाणमणेगवियप्पत्तं पडि विरोहाभावादो। समुप्पत्तिक्खेत्तमपाविय कयमारणंतियसमुग्घादजीवा पल्लट्टिय मूलसरीरं पविस्सति त्ति कधं णव्वदे? पवाइज्जंतउवदेसादो। सुहुमणिगोदेसु उप्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण किण्ण सामित्तं उच्चदे?

ण, तेसु तिव्ववेयणाकसायविवज्जिएसु एक्कसराहेण महामच्छुक्कस्समारणंतियखेत्तादो। अणेगरज्जुमेत्तखेत्तपदेसूणेसु महामच्छुक्कस्सखेत्तादो पदेसूणादिखेत्तावियप्पाणुवलंभादो। सुहुमणिगोदेसुप्पज्जमाणमहामच्छस्स उक्कस्समारणंतियखेत्तसमाणं सत्तमपुढविम्हि समुप्पज्जमाणमहामच्छमारणंतियखेत्तप्पहुडि हेट्ठिमखेत्तवियप्पा सुहुमणिगोदेसु सत्तमपुढवीए च उप्पज्जमाणमहामच्छे अस्सिदूण उप्पादेदव्वा। अहवा, महामच्छं चेव एगादिएगुत्तरागासपदेसकमेण पुरदो ओसारिय अणुक्कस्सखेत्ताणं परूवणा कायव्वा। एवं णेदव्वं जाव वेयणसमुग्घादेण समुहदमहामच्छखेत्तं त्ति। }

< शंका -- यहाँका सबसे अन्तिम क्षेत्र किससे सदृश होता है?

समाधान -- इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि यह क्षेत्र सामान्योक्त उत्कृष्ट अवगाहनवाले और वेदनासमुद्घातसे तिगुणे विष्कम्भ व उत्सेधको प्राप्त होकर एक प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है।

फिरसे भी महामत्स्यके मुख सम्बन्धी विकल्पोंका आश्रय करके प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

शंका -- यहाँ अन्तिम विकल्प किसके सदृश होता है?

समाधान -- इस प्रकार पूछनेपर उत्तर देते हैं कि वह क्षेत्र ओघोक्त उत्कृष्ट अवगाहनासे संयुक्त और पूर्व विधिके अनुसार दो प्रदेशोंसे हीन साढे सात राजु तक मारणान्तिक समुद्घातको छोड़नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है।

फिर इस मारणान्तिक क्षेत्रके आयामको अवस्थित करके महामत्स्यके मुखविकल्पोंका आश्रय कर संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। यहाँ सबसे अन्तिम विकल्प तीन प्रदेश कम साढ़े सात राजु तक मारणान्तिक समुद्घातको छोड़नेवाले महामत्स्यके क्षेत्रके सदृश होता है। इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशकी हीनताके क्रमसे मारणान्तिकसमुद्घातको छुड़ाकर अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये।

शंका -- सातवीं पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले सब जीवोंके मारणान्तिकक्षेत्रोंका आयाम समान क्यों नहीं होता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्घातको करके फिर मूल शरीरमें प्रवेश कर मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवों सम्बन्धी मारणान्तिकक्षेत्रोंके आयामोंके अनेक विकल्परूप होनेमें कोई विरोध नहीं है।

शंका -- उत्पत्तिक्षेत्रको न पाकर मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले जीव पलटकर मूल शरीरमें प्रविष्ट होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- यह परम्परागत उपदेशसे जाना जाता है।

शंका -- सूक्ष्म निगोद जीवोंमे उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, तीव्र वेदना व कषायसे रहित होनेके कारण एक साथ पूर्वोक्त महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रकी अपेक्षा अनेक राजु प्रमाण क्षेत्रप्रदेशोंसे हीन उक्त निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंमें, सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे एक प्रदेश कम दो प्रदेश कम इत्यादि क्षेत्रविकल्प नहीं पाये जाते।

सूक्ष्म निगोद जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके उत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्रके समान सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले महामत्स्यके मारणान्तिकक्षेत्रको आदि लेकर अधस्तन क्षेत्रके विकल्पोंको सूक्ष्म निगोद जीवोंमें और सातवीं पृथिवीमें भी उत्पन्न होनेवाले महामत्स्योंका आश्रय करके उत्पन्न कराना चाहिये। अथवा महामत्स्यको ही एकको आदि लेकर एक अधिक आकाशप्रदेशके क्रमसे आगे बढ़ाकर अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार वेदनासमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्यके क्षेत्र तक ले जाना चाहिये। >

{ पुणो एदेण खेत्तेण कम्हि महामच्छे मारणंतियखेत्तं सरिसमिदि उत्ते उच्चदे, तं जहा जो महामच्छो वेयणसमुग्घादेण विणा मूलायामेण सह णवजोयणसहस्साणि मारणंतियं मेल्लिदि, तस्स खेत्तं सरिसं होदि। पुणो पुव्विल्लं मोत्तूण इमं घेत्तूण खेत्तस्स सामित्तपरूवणं कायव्वं। तं जहा -- मुहम्मि एगागासपदेसेण ऊणमहामच्छेण णवजोयणसहस्साणि मुक्कमारणंतिए मेलाविय अणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्समारणंतियखेत्तं होदि। एवमेगेगासपदेसं ** (अ प्रतौ '--मेगेगाणसपदेसं', ता प्रतौ '--मेगेगासपदेस --' इति पाठः।) मुहम्मि ऊणं करिय णवजोयणसहस्साणि मारणंतियं मेल्लाविय संखेज्जपदरंगुलमेत्तखेत्ताणं सामित्तपरूवणं कायव्वं। एवं परिहाइदूण

द्विदपच्छिमखेत्तेण ओघुक्कस्सोगाहणाए पदेसूणणवजोयणसहस्साणि मुक्कमारणंतियमहामच्छखेत्तं **(प्रतिषु 'खेत्तस्स' इति पाठः।) सरिसं होदि? एवं जाणिदूण पदेसूणादिकमेण सेसखेत्ताणं पि सामित्तपरूवणं कायव्वं जाव महामच्छस्सद्धाणुक्कस्सोगाहणे त्ति। पुणो पदेसूणुक्कस्सोगाहणमहामच्छो तदणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्सखेत्तसामी। एवमेगेगं खेत्तपदेसं णिरंतरं ऊणं करिय णेयव्वं जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो एगेगपदेसूणं करिय णेदव्वं जाव बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तउक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो णिरंतरं पदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो तत्तो एगेगपदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणं पत्तमिदि। पुणो एगेगपदेसूणादिकमेण णेदव्वं जाव तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स अजहण्णमणुक्कस्समेगघणंगुलोगाहणं पत्तमिदि। एवं णिरंतरकमेण एगेगपदेसूणं करिय णेयव्वं जाव सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणं पत्तमिदि। एवमसंखेज्जसेडिमेत्ताणमणुक्कस्सखेत्तवियप्पाणं सामित्तपरूवणा कदा। }

< शंका -- इस क्षेत्रसे कौनसे महामत्स्यका क्षेत्र सदृश होता है?

समाधान -- इस शंकाका उत्तर कहते हैं। वह इस प्रकार है -- जो महामत्स्य वेदनासमुद्घातके विना मूल आयामके साथ नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करता है उसका क्षेत्र इस क्षेत्रके सदृश है।

अब पूर्वके क्षेत्रको छोड़कर व इसे ग्रहण कर स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। वह इस प्रकार है -- मुखमें एक आकाशप्रदेशसे हीन होकर नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट मारणान्तिकक्षेत्र होता है। इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशको मुखमें कम करके नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको कराकर संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार हीन होकर स्थित अन्तिम क्षेत्रसे ओघोक्त उत्कृष्ट अवगाहनामें एक प्रदेश कम नौ हजार योजन मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवाले महामत्स्यका क्षेत्र सदृश होता है। इस प्रकार एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे महामत्स्यके अध्वानमें उत्कृष्ट अवगाहना तक शेष क्षेत्रोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। पुनः एक प्रदेश कम

अवगाहनावाला महामत्स्य उससे अनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी होता है। इस प्रकार एक एक क्षेत्रप्रदेशको निरन्तर कम करके बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीरकी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश कम करके द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे निरन्तर एक प्रदेश कम, दो प्रदेश कम इत्यादि क्रमसे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिये। फिर उसमेंसे एक एक प्रदेश हीनादिके क्रमसे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी अजघन्य अनुत्कृष्ट एक घनांगुल मात्र अवगाहनाके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिये। इस प्रकार निरन्तर क्रमसे एक एक प्रदेश हीन करके सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार असंख्यात श्रेणि मात्र अनुत्कृष्ट क्षेत्र सम्बन्धी विकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गयी है। >

{ संपहि एदेसिं खेत्तवियप्पाणं जे सामिणो जीवा तेसिं परूवणाए कीरमाणाए तत्थ छअणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। तत्थ परूवणा उच्चदे। तं जहा -- उक्कस्सए ठाणे अत्थि जीवा। एवं णेदव्वं जाव जीवट्ठाणे त्ति। परूवणा गदा। }

< अब इन क्षेत्रविकल्पोंके जो जीव स्वामी हैं उनकी प्ररूपणा करते समय वहाँ छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं -- (प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि, अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व।) उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वार कहते हैं। वह इस प्रकार है -- उत्कृष्ट स्थानमें जीव हैं। इस प्रकार जघन्य स्थान तक ले जाना चाहिये। >

{ उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा केत्तिया? असंखेज्जा। एवं तसकाइयपाओग्गखेत्तवियप्पेसु असंखेज्जजीवा त्ति वत्तव्वं। थावरकाइयपाओग्गेसु वि असंखेज्जलोगा। णवरि वणप्फइकाइयपाओग्गेसु अणंता। एवं पमाणपरूवणा गदा। }

< उत्कृष्ट स्थानमें जीव कितने हैं? वे वहाँ असंख्यात हैं। इस प्रकार त्रसकायिकोंके योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें असंख्यात जीव हैं ऐसा कहना चाहिये। स्थावरकायिकोंके योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें भी

असंख्यात लोकप्रमाण जीव हैं। विशेष इतना है कि वनस्पतिकायिक योग्य क्षेत्रविकल्पोंमें अनन्त जीव हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ सेडी अवहारो च ण सक्कदे णेदुमुवदेसाभावादो। णवरि एइंदिएसु जहण्णट्ठाणजीवेहिंतो बिदियट्ठाणजीवा विसेसाहिया विसेसहीणा वा अंतोमुहुत्तपडिभागेण। }

< श्रेणि और अवहारकी प्ररूपणा नहीं की जा सकती, क्योंकि, उनका उपदेश प्राप्त नहीं है। विशेष इतना है कि, एकेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य स्थानसम्बन्धी जीवोंकी अपेक्षा द्वितीय स्थान सम्बन्धी जीव अन्तर्मुहूर्त प्रतिभागसे विशेष अधिक अथवा विशेष हीन हैं। >

{ उक्कस्सट्ठाणजीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो? अणंतिमभागो। जहण्णए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। अजहण्ण-अणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जा भागा। एवं भागाभागपरूवणा गदा। }

< उत्कृष्ट स्थानके जीव सब स्थानसम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं। जघन्य स्थानमें जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे उनके असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं। इस प्रकार भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा। जहण्णए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा। अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। अजहण्णए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया। }

<   उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं। उनसे जघन्य स्थानमें वे अनन्तगुणे हैं। उनसे अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं।

शंका -- गुणकार क्या है?

समाधान -- गुणकार अंगुलका असंख्यातवाँ भाग है।

उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं। >

{   अधवा अप्पाबहुगं तिविहं -- जहण्णयमुक्कस्सयमजहण्णमणुक्कस्सयं चेदि। तत्थ जहण्णए -- सव्वत्थोवा जहण्णए ट्ठाणे जीवा। अजहण्णए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा। उक्कस्सए पयदं -- सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा। अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा। अजहण्णअणुक्कस्सए पयदं -- सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा। जहण्णए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा। अजहण्णअणुक्कस्सएसु ट्ठाणेसु जीवा असंखेज्जगुणा। अजहण्णए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा विसेसाहिया।

}

<   अथवा, अल्पबहुत्व तीन प्रकार है -- जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्य-अनुत्कृष्ट। उनमें जघन्य अल्पबहुत्व प्रकृत है -- जघन्य स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे अजघन्य स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। उत्कृष्ट अल्पबहुत्व प्रकृत है -- उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे थोड़े हैं। अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट अल्पबहुत्वप्रकृत है -- उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। जघन्य स्थानमें जीव उनसे अनन्तगुणे हैं। अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंमें जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं। >

{   एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं।।१४।।   }

{ इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्मके भी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट वेदनाओंकी प्ररूपणा करना चाहिये।।१४।। }

{ एदेसिं तिण्हं घादिकम्माणं जहा णाणावरणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा कदा तहा कायव्वं, विसेसाभावादो । }

< जैसे ज्ञानावरणीयके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही इन तीन घाति कर्मोंके उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है।

>

{ सामित्तेण उक्कस्सपदे वेदणीयस्स वेदणा खेत्तदो उक्कस्सिया कस्स ** (अ-का प्रत्योः 'तस्स' इति पाठः।) ? ।।१५।। }

< स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें वेदनीय कर्मकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है? >

{ उक्कस्सपदे त्ति णिद्देसेण जहण्णपदपडिसेहो कदो। वेदणीयवेदणा त्ति णिद्देसेण सेसकम्मवेयणाए पडिसेहो कदो। खेत्तणिद्देसेण दव्वादिवेयणाणं पडिसेहो कदो। कस्से त्ति किं देवस्स, किं णेरइयस्स, किं तिरिक्खस्स, किं मणुस्सस्स होदि त्ति पुच्छा कदा। }

< 'उत्कृष्ट पदमें' इस निर्देशसे जघन्य पदका प्रतिषेध किया गया है। 'वेदनीय कर्मकी वेदना' इस निर्देशसे शेष कर्मोंकी वेदनाका प्रतिषेध किया है। क्षेत्रका निर्देश करनेसे द्रव्यादि वेदनाओंका प्रतिषेध किया जाता है। 'किसके होती है?' इससे उक्त वेदना क्या देवके, क्या नारकीके, क्या तिर्यंचके और क्या मनुष्यके होती है; यह पृच्छा की गयी है। >

{ अण्णदरस्स केवलिस्स केवलिसमुग्घादेण समुहदस्स सव्वलोगं गदस्स तस्स वेदणीयवेदणा खेत्तदो उक्कस्सा।।१६।। }

< अन्यतर केवलीके, जो केवलिसमुद्‌घातसे समुद्‌घातको व उसमें ही सर्वलोक अर्थात् लोकपूरण अवस्थाको प्राप्त हैं, उनके वेदनीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है। ।।१६।। >

{ अण्णदरस्से त्ति णिद्देसेण ओगाहणाविसेसाणं भरहादिक्खेत्तविसेसाणं च पडिसेहाभावो परूविदो। केवलिस्से त्ति णिद्देसेण छदुमत्थाणं पडिसेहो कदो। केवलिसमुग्घादेण समुहदस्से त्ति ** (अ-का प्रत्योः 'समुहस्से त्ति' इति पाठः।) णिद्देसेण सत्थाणकेवलिपडिसेहो कदो। सव्वलोगं गदस्से त्ति णिद्देसेण दंडकवाड-पदरगदाणं पडिसेहो कदो। सव्वलोगपूरणे वट्टमाणस्स उक्कस्सिया वेयणीयवेयणा होदि त्ति उत्तं होदि। एत्थ उवसंहारो सुगमो। }

< 'अन्यतर' पदके निर्देशसे अवगाहनाविशेषोंके और भरतादिक क्षेत्रविशेषोंके प्रतिषेधका अभाव बतलाया गया है। 'केवली' पदका निर्देश करके छद्मस्थोंका प्रतिषेध किया गया है। 'केवलिसमुद्‌घातसे समुद्‌घातको प्राप्त' इस निर्देशसे स्वस्थानकेवलीका प्रतिषेध किया है। 'सर्व लोकको प्राप्त' इस निर्देशसे दण्ड, कपाट और प्रतर समुद्‌घातको प्राप्त हुए केवलियोंका प्रतिषेध किया है। सर्वलोकपूरण समुद्‌घातमें रहनेवाले केवलीके उत्कृष्ट वेदनीयवेदना होती है, यह उसका अभिप्राय है। यहाँपर उपसंहार सुगम है। >

{ तव्वदिरित्ता अणुक्कस्सा।।१७।।}

< उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट है।। १७।। >

{ एदम्हादो उक्कस्सखेत्तवेयणादो वदिरित्ता खेत्तवेयणा अणुक्कस्सा होदि। तत्थतणउक्कस्सियाए खेत्तवेयणाए पदरगदो केवली सामी, एदम्हादो अणुक्कस्सखेत्तेसु

महल्लखेत्ताभावादो। एदं च उक्कस्सखेत्तादो विसेसहीणं, वादवलयब्भंतरे जीवपदेसाणमभावादो। सव्वमहल्लोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदणंतरअणुक्कस्सखेत्तट्ठाणसामी। णवरि पुव्विल्लअणुक्कस्सखेत्तादो बिदियमणुक्कस्सखेत्तमसंखेज्जगुणहीणं संखेज्जसूचीअंगुलबाहल्ल-जगपदरपमाणकवाडखेत्तं पेक्खिदूण मंथखेत्तस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। पदेसूणुक्कस्सविक्खभोगाहणाए कवाडं गदो केवली तदियखेत्तसामी। णवरि बिदियमणुक्कस्सखेत्तं पेक्खिदूण तदियमणुक्कस्सखेत्तं विसेसहीणं होदि, पुव्विल्लखेत्तादो दो जगपदरखेत्तपरिहाणिदंसणादो। दुपदेसूणुक्कस्सविक्खंभेण कवाडं गदो चउत्थखेत्तसामी। एदं पि अणंतरपुव्विल्लखेत्तं पेक्खिदूण विसेसहीणं दोजगपदरमेत्तेण। एवं सांतरकमेण खेत्तसामित्तं परूवेदव्वं जाव आहुट्ठरयणिउस्सेहओगाहणाए विक्खंभेणूणपंचधणुसदपणुवीसुत्तरुस्सेह-ओगाहणविक्खंभमेत्तकवाडखेत्तवियप्पा त्ति। पुणो एदेण सव्वजहण्णपच्छिमक्खेत्तेण सरिसमुत्तराहिमुहकवाडखेत्तं घेत्तूण पुणो तत्तो एगेगपदेसं विक्खंभम्मि ऊणं करिय कवाडं णेदूण खेत्तवियप्पाणं सामित्तं परूवेदव्वं जाव उत्तराभिमुहकेवलिजहण्णकवाडक्खेत्तं पत्तो त्ति। पुणो तदणंतरहेट्ठिमअणुक्कस्सखेत्तसामी महामच्छो तिण्णिविग्गहकंडएहि सत्तमपुढविमारणंतियसमुग्घादेण समुहदो सामी, अण्णस्स कवाडजहण्णखेत्तादो ऊणस्स अणुक्कस्सखेत्तस्स अणुवलंभादो। णवरि कवाडजहण्णखेत्तादो महामच्छस्स उक्कस्समहसंखेज्जगुणहिनं। }

< इस उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनासे भिन्न क्षेत्रवेदना अनुत्कृष्ट होती है। अनुत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाविकल्पोंमें उत्कृष्ट क्षेत्रवेदनाके स्वामी प्रतरसमुद्‌घातको प्राप्त केवली हैं, क्योंकि अनुत्कृष्ट क्षेत्रोंमें इससे और कोई बड़ा क्षेत्र नहीं है। यह क्षेत्र उत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा विशेष हीन है, क्योंकि, इस क्षेत्रमें जीवके प्रदेश वातवलयके भीतर नहीं रहते। सबसे बड़ी अवगाहना द्वारा कपाटसमुद्‌घातको प्राप्त केवली तदनंतर अनुत्कृष्ट क्षेत्रस्थानके स्वामी हैं। विशेष इतना है कि पूर्वके अनुत्कृष्ट क्षेत्रसे द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है, क्योंकि, संख्यात सूच्यंगुल बाहल्य रूप जगप्रतर प्रमाण कपाटक्षेत्रकी अपेक्षा मंथक्षेत्र असंख्यातगुणा पाया जाता है। एक प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भयुक्त अवगाहनासे कपाटसमुद्‌घातको प्राप्त केवली तृतीय क्षेत्रके स्वामी हैं। विशेष इतना है कि द्वितीय अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी अपेक्षा तृतीय क्षेत्र विशेष हीन है, क्योंकि

इसमें पूर्वकी अपेक्षा दो जगप्रतर मात्र क्षेत्रकी हानि देखी जाती है। दो प्रदेश कम उत्कृष्ट विष्कम्भसे कपाटको प्राप्त केवली चतुर्थ क्षेत्रके स्वामी हैं। यह भी अव्यवहित पूर्वके क्षेत्रकी अपेक्षा दो जगप्रतर मात्रसे विशेष हीन है। इस प्रकार सान्तरक्रमसे साढ़े तीन रत्नि उत्सेध युक्त अवगाहनाके विष्कम्भसे हीन पाँच सौ धनुष्य उत्सेधयुक्त अवगाहनाके विष्कम्भ प्रमाण कपाटक्षेत्रके विकल्पों तक क्षेत्रस्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिए। फिर इस सर्वजघन्य अन्तिम क्षेत्रके सदृश उत्तराभिमुख कपाटक्षेत्रको ग्रहण करके पश्चात् उससे विष्कम्भमें एक प्रदेश कम करके कपाटसमुद्घातको लेकर उत्तराभिमुख केवलीके जघन्य कपाटक्षेको प्राप्त होने तक क्षेत्रविकल्पोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये। पुनः तीन विग्रहकाण्डकों द्वारा सातवीं पृथिवीमें मारणान्तिकसमुद्घातसे समुद्घातको प्राप्त महामत्स्य तदनन्तर अधस्तन अनुत्कृष्ट क्षेत्रका स्वामी है, क्योंकि, उक्त जघन्य कपाटक्षेत्रसे हीन और दूसरा अनुत्कृष्ट क्षेत्र पाया नहीं जाता। विशेष इतना है कि जघन्य कपाटक्षेत्रसे महामत्स्यका उत्कृष्ट क्षेत्र असंख्यातगुणा हीन है। >

{ एत्तो प्पहुडि उवरिमक्खेत्तवियप्पाणं घादिकम्माणं भणिदविहाणेण सामित्तपरूवणं कायव्वं। दंडगयकेवलिखेत्तट्ठाणाणि संखेज्जपदरंगुलमेत्ताणि महामच्छक्खेत्तंतो णिवदंति त्ति पुध ण परूविदाणि। केवली दंडं करेमाणो सव्वो सरीरतिगुणबाहल्लेण ** (अ-का प्रत्योः 'बाहिल्लेण' इति पाठः।) (ण) कुणदि, वेयणाभावादो। को पुण सरीरतिगुणबाहल्लेण दंडं कुणइ? पलियंकेण णिसण्णकेवली। }

< अब यहाँसे आगे पूर्वोक्त घातिकर्मोंके विधानसे उपरिम क्षेत्रविकल्पोंकी प्ररूपणा करना चाहिये। दण्डगत केवलीके संख्यात प्रतरांगुल मात्र क्षेत्रस्थान चूँकि महामत्स्यक्षेत्रके भीतर आ जाते हैं, अतः उनकी पृथक् प्ररूपणा नहीं की गयी है। दण्डसमुद्घातको करनेवाले सभी केवली शरीरसे तिगुणे बाहल्यसे उक्त समुदघातको नहीं करते, क्योंकि, उनके वेदनाका अभाव है।

शंका -- तो फिर कौनसे केवली शरीरसे तिगुणे बाहल्यसे दण्डसमुद्घातको करते हैं?

समाधान -- पल्यंक आसनसे स्थित केवली उक्त प्रकारसे दण्डसमुद्घातको करते हैं। >

{ एदेसिं खेत्ताणिं सामिजीवाणं परूवणे कीरमाणे छअणुयोगद्दाराणि हवंति। तत्थ परूवणाए वेयणीयसव्वखेत्तवियप्पेसु अत्थि जीवा। परूवणा गदा। }

< इन क्षेत्रोंके स्वामी जीवोंकी प्ररूपणा करनेमें छह अनुयोगद्वार हैं। उनमें प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी अपेक्षा वेदनीय कर्मके सब क्षेत्रविकल्पोंमें जीव हैं। प्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा केत्तिया? संखेज्जा। एवं णेयव्वं जाव कवाडगदकेवलिजहण्णक्खेत्तवियप्पे त्ति। उवरि महामच्छउक्कस्सखेत्तप्पहुडि तसपाओगक्खेत्तेसु असंखेज्जा। वणप्फदिकाइयपाओग्गेसु अणंता। एवं पमाणपरूवणा गदा। सेडिपरूवणा ण सक्कदे णेदुं, पवाइज्जंतुवदेसाभावादो। }

< उत्कृष्ट स्थानमें कितने जीव हैं? संख्यात हैं। इस प्रकार कपाटसमुद्‌घातगत केवलीके जघन्य क्षेत्रविकल्पतक ले जाना चाहिये। आगे महामत्स्यके उत्कृष्ट क्षेत्रसे लेकर त्रस योग्य क्षेत्रोंमें असंख्यात जीव हैं। वनस्पतिकायिक योग्य क्षेत्रोंमें अनन्त जीव हैं। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिपरंपरा बतलाना शक्य नहीं है, क्योंकि, उसके विषयमें प्रवाह स्वरूपसे प्राप्त हुए परंपरागत उपदेशका अभाव है। >

{ अवहारो उच्चदे -- उक्कस्सट्ठाणजीवपमाणेण सव्वट्ठाणजीवा केवचिरेण कालेण अवहरिज्जंति? अणंतेण कालेण। एवं णेदव्वं जाव तसकाइय-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयपाओग्गट्ठाणे त्ति। सुहुम-बादरवणप्फदिकाइयओग्गट्ठाणजीवपमाणेण सव्वजीवा केवचिरेण कालेण अवहरिज्जंति? असंखेज्जेण।}

< अवहारकी प्ररूपणा करते हैं -- उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं। वे प्रमाणसे अनन्त कालमें अपहृत होते हैं। इस प्रकार

त्रसकायिक, पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक और वायुकायिक योग्य स्थानों तक ले जाना चाहिये। सूक्ष्म बादर वनस्पतिकायिक योग्य स्थानों सम्बन्धी जीवोंके प्रमाणसे सब जीव कितने कालसे अपहृत होते हैं? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात कालमें अपहृत होते हैं। >

{ भागाभागो वुच्चदे -- उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो? अणंतिमभागो। जहण्णए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। अजहण्णुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा सव्वट्ठाणजीवाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जा भागा। भागाभागपरूवणा गदा। }

< भागाभागकी प्ररूपणा करते हैं -- उत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे उनके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं। जघन्य स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। अजघन्योत्कृष्ट स्थानमें रहनेवाले जीव सब स्थानों सम्बन्धी जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे उनके संख्यात बहुभाग प्रमाण हैं। भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो -- सव्वत्थोवा उक्कस्सए ट्ठाणे जीवा। जहण्णए ट्ठाणे जीवा अणंतगुणा। अजहण्णुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा असंखेज्जगुणा। अजहण्णए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। अणुक्कस्सए ट्ठाणे जीवा विसेसाहिया। सव्वेसु ट्ठाणेसु जीवा **(अ-का प्रत्योः 'जीवा' इत्येतत् पदं नोपलभ्यते।) विसेसाहिया। }

< अल्पबहुत्वको कहते हैं -- उत्कृष्ट स्थानमें जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे जघन्य स्थानमें जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव असंख्यातगुणे हैं। उनसे अजघन्य स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे अनुत्कृष्ट स्थानमें जीव विशेष अधिक हैं। उनसे सब स्थानोंमें जीव विशेष अधिक हैं।>

{ एवमाउव-णामा-गोदाणं ।।१८।। }

< इसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट वेदनाक्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये।।१८।। >

{ जहा वेदणीयस्स उक्कस्साणुक्कस्सक्खेत्तपरूवणा कदा तहा आउव-णामा-गोदाणं पि खेत्तपरूवणं कायव्वं, विसेसाभावादो। एवमुक्कस्साणुक्कस्सखेत्तपरूवणा समत्ता। }

< जिस प्रकार वेदनीय कर्मके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट क्षेत्रकी प्ररूपणा की गयी है, उसी प्रकार आयु, नाम व गोत्र कर्मके भी उक्त क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार उत्कृष्ट-अनुत्कृष्टक्षेत्रप्ररूपणा समाप्त हुई।>

{ सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णिया कस्स?।।१९।।
}

< स्वामित्वसे जघन्य पदमें ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है? ।।१९।। >

{ जहण्णपदणिद्देसो सेसपदपडिसेहफलो। णाणावरणीयणिद्देसो सेसकम्मपडिसेहफलो। खेत्तणिद्देसो दव्वादिपडिसेहफलो। कस्स त्ति देव-णेरइयादिविसपपुच्छा। }

< जघन्य पदका निर्देश शेष पदोंके प्रतिषेधके लिये किया है। ज्ञानावरणीयका निर्देश शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेवाला है। क्षेत्रका निर्देश द्रव्यादिकका प्रतिषेध करता है। 'किसके होती है?' इस निर्देशसे देव व नारकी आदि विषयक पृच्छा प्रकट की गयी है। >

{ अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवलद्धिअपज्जत्तयस्स ** (सुहमणिगोदअपज्जतयस्स जादस्स तदियसमयम्हि । अंगुलअसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे।। गो. जी. ९४) तिसमयआहारयस्स

तिसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स सव्वजहण्णियाए सरीरागोहणाए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा।।२०।। }

< अन्यतर सूक्ष्म निगोद जीव लब्ध्यपर्याप्तक, जो कि त्रिसमयवर्ती आहारक है, तद्‌भवस्थ होनेके तृतीय समयमें वर्तमान है, जघन्य योगवाला है, और शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनामें वर्तमान है; उसके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य होती है। >

{ सुहुमणिगोदा अणंता अत्थि, तत्थ एक्कस्स गहणट्ठमण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवस्से त्ति उत्तं। तत्थ पज्जत्तणिराकरणट्ठमपज्जत्तस्से त्ति उत्तं। पज्जत्तणिराकरणं किमट्ठं कीरदे? अपजत्तजहण्णोगाहणादो पज्जत्तजहण्णोगाहणाए बहुत्तुवलंभादो। विग्गहगदीए जहण्णोगाहणा वि पुव्विल्लोगाहणाए सरिसा त्ति तप्पडिसेहट्ठ तिसमयआहारस्से त्ति भणिदं। उजुगदीए उप्पण्णो त्ति जाणावणट्ठं तिसमयतब्भवत्थस्से त्ति भणिदं। एग-दो-तिण्णि वि विग्गहे कादूण उप्पाइय छसमयतब्भवत्थस्स जहण्णसामित्तं किण्ण कीरदे? ण, पंचसु समएसु असंखेज्जगुणाए सेडीए वड्ढिदेण एगंताणुवड्ढिजोगेण बहुओगाहणप्पसंगादो ** (तर्हि ऋजुगत्योत्पन्नस्यैव कथमुक्तम्? विग्रहगतौ योगवृद्धियुक्तत्वेन तदवगाहवृद्धिसम्भवात्। गो. जी. (जी. प्र.) ९४) पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णखेत्तसामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, तत्थ आयदचउरस्सक्खेत्तागारेण ** (प्रतिषु 'चउरस्सं खेत्तागारेण' इति पाठः।) ओगाहणाए त्थोवत्ताणुववत्तीदो। उजुगदीए उप्पण्णपढमसमयम्मि आयदचउरंससरूवेण जीवपदेसा चिट्ठंति त्ति कधं णव्वदे? पवाइज्जंतुवदेसादो। बिदियसमयआहारय-बिदियसमयतब्भवत्थस्स जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, तत्थ समचउरंससरूवेण जीवपदेसाणमवट्ठाणादो। बिदियसमए विक्खंभसमो आयामो जीवपदेसाणिं होदि त्ति कुदो णव्वदे? परमगुरूवदेसादो। तदियसमयआहारयस्स तदियसमयतब्भवत्थस्स चेव जहण्णखेत्तसामित्तं किमट्ठं दिज्जदे? ण एस दोसो, चउरंसखेत्तस्स चत्तारि वि कोणे संकोडिय वट्टुलागारेण जीवपदेसाणं तत्थावट्ठाणदंसणादो ** (ननूत्पन्नतृतीयसमये एव सर्वजघन्यावगाहनं कथं सम्भवेत् इति चेत् -- प्रथमसमये निगोदजीवशरीरस्यायतचतुरस्रत्वात् द्वितीयसमये समचतुरस्रत्वात् तृतीयसमये कोणापनयनेन वृत्तत्वात् तदेव (तदैव) तदवगाहनस्याल्पत्वसम्भवात्। गो. जी. (जी. प्र.) ९४) तत्थ वट्टुलागारेण

जीवावट्ठाणं कधं णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जहण्णउववादजोग-जहण्णएगंताणुवड्ढिजोगेहि चेव तिसु वि समएसु पयट्टो त्ति जाणावणट्ठं जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं। तदियसमए अजहण्णाओ वि ओगाहणाओ अत्थि त्ति तप्पडिसेहट्ठं सव्वजहण्णियाए वट्टमाणस्से त्ति भणिदं। एवंविहविसेसणेहि विसेसियस्स यस्स सुहुमणिगोदजीवस्स णाणावरणीयवेयणा खेत्तदो जहण्णा। एत्थ उवसंहारो उच्चदे -- एगउस्सेहघणंगुलं ठविय तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे णाणावरणीयस्स जहण्णखेत्तं होदि। }

< सूक्ष्म निगोदिया जीव अनन्त हैं। उनमेंसे एकका ग्रहण करनेके लिए 'अन्यतर सूक्ष्म निगोद जीवके' ऐसा कहा है। उनमें पर्याप्तका निराकरण करनेके लिये 'अपर्याप्तके' ऐसा निर्देश किया है।

शंका -- पर्याप्तका निराकरण किसलिये किया जा रहा है?

समाधान -- अपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे चूँकि पर्याप्तकी जघन्य अवगाहना बहुत पायी जाती है, अतः उसका निषेध किया गया है।

विग्रहगतिमें चूँकि जघन्य अवगाहना भी पूर्व अवगाहनाके सदृश है, अतः उसका निषेध करनेके लिये 'त्रिसमयवर्ती आहारक' ऐसा कहा है। ऋजुगतिसे उत्पन्न हुआ, इस बातके इ ापनार्थ 'तृतीयसमयवर्ती तद्‌भवस्थ' ऐसा कहा है।

शंका -- एक, दो अथवा तीन भी विग्रह करके उत्पन्न कराकर षष्ठसमयवर्ती तद्‌भवस्थ निगोद जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पाँच समयोंमें असंख्यातगुणित श्रेणिसे वृद्धिको प्राप्त हुए एकान्तानुवृद्धियोगसे बढ़नेवाले उक्त जीवके बहुत अवगाहनाका प्रसंग आता है।

शंका -- प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्‌भवस्थ हुए निगोद जीवके जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना क्यों नहीं देते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उस समय आयतचतुरस्र क्षेत्रके आकारसे स्थित उक्त जीवमें अवगाहनाका स्तोकपना बन नहीं सकता।

शंका -- ऋजुगतिमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयतचतुरस्र स्वरूपसे जीवप्रदेश स्थित रहते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है।

शंका -- द्वितीय समयवर्ती आहारक और तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें वर्तमान जीवके जघन्य स्वामीपना क्यों नहीं देते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उस समयमें भी जीवप्रदेश समचतुरस्र स्वरूपसे अवस्थित रहते हैं।

शंका -- द्वितीय समयमें जीवप्रदेशोंका विष्कम्भसे समान आयाम होता है, यह कहाँसे जाना जाता है?

समाधान -- वह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

शंका -- तृतीय समयवर्ती आहारक और तृतीय समयवर्ती तद्भवस्थ निगोद जीवके ही जघन्य क्षेत्रका स्वामीपना किसलिये देते हैं?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उस समयमें चतुरस्र क्षेत्रके चारों ही कोनोंको संकुचित करके जीवप्रदेशोंका वर्तुल अर्थात् गोल आकारसे अवस्थान देखा जाता है।

शंका -- उस समय जीवप्रदेश वर्तुल आकारसे अवस्थित होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्तानुयोगवृद्धियोगसे ही तीनों समयोंमें प्रवृत्त होता है, इस बातको जतलानेके लिए 'जघन्य योगवालेके' ऐसा सूत्रमें निर्देश किया है। तृतीय समयमें अजघन्य भी अवगाहनाएँ होती हैं, अतः उनका प्रतिषेध करनेके लिए 'शरीरकी सर्वजघन्य अवगाहनामें वर्तमान' यह कहा है। इन विशेषणोंसे विशेषताको प्राप्त हुए सूक्ष्म निगोद जीवके ज्ञानावरणीयकी वेदना क्षेत्रसे जघन्य होती है। यहाँ उपसंहार कहते हैं -- एक उत्सेध घनांगुलको स्थापित करके तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर ज्ञानावरणीयका जघन्य क्षेत्र होता है। >

{ तव्वदिरित्तमजहण्णा।।२१।। }

<   उससे भिन्न अजघन्य वेदना होती है ।।२१।।   >

{   तत्तो जहण्णक्खेत्तादो वदिरित्ता खेत्तवेयणा अजहण्णा। सा च बहुपयारा। तासिं सामित्तपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं विरलेदूण घणंगुलं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणं पावदि। पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरोगाहणाए तत्थेव ट्ठिदो अजहण्णजहण्णक्खेत्तस्स सामी। एत्थ काए वड्ढीए वड्ढिदो बिदियखेत्तवियप्पो? असंखेज्जभागवड्ढीए ** (अवरुवरि इगिपदेसे जुदे असंखेज्जभागवड्ढीए। आदी निरंतरमदो एगेगपदेसपरिवड्ढी।। गो. जी. १०२.)। तं जहा -- जहण्णोगाहणं हेट्ठा विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे एगागासपदेसो पावदि। पुणो एत्तियमेत्तेण अहियमुवरिमएगरूवधरिदमिच्छामो त्ति रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छामोवट्टिय लद्धे उवरिमविरलणाए सरिसच्छेदं कादूण सोहिदे अजहण्ण-जहण्णोगाहणाए भागहारो होदि। जहण्णखेत्तस्सुवरि दोआगासपदेसे ** (अ-का प्रत्योः "-- पदेसो' इति पाठः।) वड्ढिय ट्ठिदो बिदियअजहण्णखेत्तस्स सामी ** (अ-का प्रत्योः '--अजहण्णखेत्तस्सुवरि सामी' इति पाठः।)। एत्थ वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव। तं जहा -- हेट्ठिमविरलणाए दुभागेण रूवाहिएण उवरिमविरलणं खंडिय तत्थ एगखंडेण उवरिमविरलणाए अवणिदे बिदियखेत्तभागहारो होदि। तिपदेसुत्तरजहण्णोगाहणाए वट्टमाणो जीवो तदियखेत्तसामी। एत्थ वि भागहारपरिहाणी पुव्वं व कायव्वा। णवरि हेट्ठिमविरलणाए तिभागो रूवाहियो उवरिमविरलणाए भागहारो होदि। एवमेगेगासपदेसं वड्ढाविय णेदव्वं जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तागासपदेसा वड्ढिदा त्ति। एत्थ भागहारायणं उच्चदे -- जहण्णपरितासंखेज्जेणोवट्टिदहेट्ठिमविरलणाए रूवाहियाए उवरिमविरलणमोवट्टिय तत्थुवलद्धे तत्थेव अवणिदे तदित्थखेत्तभागहारो होदि। एवं पदेसेसु एगादिएगुत्तरकमेण वड्ढमाणेसु केत्तिए अद्धाणे गदे उवरिमविरलणाए एगरूवपरिहाणी ** (अ-का प्रत्योः 'एगरूवपरिहाणी', ता प्रतौ 'एग (स) रूवपरिहाणी' इति पाठः।) लब्भदे? रूवूणुवरिमविरलणाए जहण्णोगाहणाए खंडिदाए तत्थ एगखंडमेत्तेसु अजहण्णखेत्तवियप्पेसु अदिक्कंतेसु एगरूवपरिहाणी लब्भदि। तं जहा -- रूवूणुवरिमविरलणं हेट्ठा विरलिय जहण्णखेत्तं

समखंडं करिय दिण्णे विरलणरूवं पडि वड्ढिरूवाणि पावेंति। पुणो एदाणि उवरि दादूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं उच्चदे -- रूवाहिय हेट्ठिम विरलणमेत्ताणं गंतूण जदि एगसरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवमागच्छदि। तम्हि उवरिमविरलणाए अवणिदे तदित्थखेत्तवियप्पभागहारो होदि। एवं गंतूण जहण्णोगाहणं **(अ-का प्रत्योः 'जहण्णोगाहणा', ता प्रतौ 'जहण्णोगाहणा (णं)' इति पाठः।) जहण्णपरित्तासंखेज्जेण खंडेदूण तत्थ एगखंडे वड्ढिदे वि असंखेज्जभागवड्ढी चेव। एत्थ समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणयणं उच्चदे -- रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तद्धाणम्मि जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परिहाणिरूवाणि आगच्छंति। पुणो ताणि उवरिमविरलणाए अवणिदे तदित्थअजहण्णखेत्तट्ठाणभागहारो होदि। पुणो एदिस्से ओगाहणाए उवरि ** (प्रतिषु 'उवरिम' इति पाठः।) पदेसुत्तरं वड्ढिय ट्ठिदजीवो तदणंतरउवरिमखेत्तसामी होदि। एत्थ वि असंखेज्जदिभागवड्ढी चेव, उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं ** (का प्रतौ 'जहण्णोगाहणा' इति पाठः।) खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तपदेसाणं वड्ढीए अभावादो ** (प्रतिषु 'वड्ढी-अभावादो', ता प्रतौ 'वड्ढिअभावादो' इति पाठः।)। एवं गंतूण उक्कस्ससंखेज्जेण जहण्णोगाहणं खंडिय तत्थेगखंडे जहण्णोगाहणाए उवरि वड्ढिदे संखेज्जभागवड्ढीए आदि असंखेज्जभागवड्ढीए परिसमत्तो च जादा ** (अवरोग्गाहणमाणे जहण्णपरिमिदअसंखरासिहिदे। अवरस्सुवरि उड्ढे जेट्ठमसंखेज्जभागस्स।। गो. जी. १०३)। }

< उससे अर्थात् जघन्य क्षेत्रसे भिन्न क्षेत्रवेदना अजघन्य है। वह अनेक प्रकार है। उन बहुविध क्षेत्रवेदनाओंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- पल्योपमके असंख्यातवें भागका विरलन करके घनांगुलको समखण्ड करके देनेपर एक एक रूपके प्रति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवकी जघन्य अवगाहना प्राप्त होती है। पश्चात् इसके आगे एक प्रदेश अधिक अवगाहनासे वहाँ (निगोद पर्यायमें) ही स्थित जीव अजघन्य क्षेत्रवेदनाके जघन्य स्थानका स्वामी होता है।

शंका -- यहाँ द्वितीय क्षेत्रविकल्प कौनसी वृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत हुआ है?

समाधान -- वह असंख्यातभागवृद्धिके द्वारा वृद्धिंगत हुआ है। वह इस प्रकारसे -- जघन्य अवगाहनाका नीचे विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर एक आकाशप्रदेश प्राप्त होता है। अब इतने मात्रसे अधिक उपरिम एक रूपधरित राशिकी चूँकि इच्छा है, अतः एक रूपसे अधिक अधस्तन विरलनमें यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलन राशिमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करके लब्धको समच्छेद करके उपरिम विरलनमेंसे घटा देनेपर अजघन्य जघन्य अवगाहनाका भागहार होता है।

जघन्य क्षेत्रके ऊपर दो आकाशप्रदेशोंको बढ़ाकर स्थित जीव अजघन्य क्षेत्रका स्वामी होता है। यहाँ भी असंख्यातभागवृद्धि ही है। यथा -- अधस्तन विरलनके रूपाधिक द्वितीय भागसे उपरिम विरलन राशिको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय क्षेत्रका भागहार होता है।

तीन प्रदेश अधिक जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला जीव तृतीय क्षेत्रका स्वामी है। यहाँपर भी भागहारकी हानिको पहलेके समान ही करना चाहिये। विशेष इतना है कि अधस्तन विरलनका रूपाधिक तृतीय भाग उपरिम विरलनका भागहार होता है। इस प्रकार एक एक आकाशप्रदेशको बढ़ाकर जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण आकाशप्रदेशोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिये। यहाँ भागहार लेनेकी विधि कहते हैं -- जघन्य परीतासंख्यातसे अपवर्तित रूपाधिक अधस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनको अपवर्तित करके जो वहाँ उपलब्ध हो उसे उसीमेंसे घटा देनेपर अजघन्य जघन्य अवगाहनाका भागहार होता है।

जघन्य क्षेत्रके ऊपर दो आकाशप्रदेशोंको बढ़ाकर स्थित जीव द्वितीय क्षेत्रका स्वामी होता है। यहाँ भी असंख्यातभागवृद्धि ही है। यथा -- अधस्तन विरलनके रूपाधिक द्वितीय भागसे उपरिम विरलन राशिको खण्डित कर उसमेंसे एक खण्डको उपरिम विरलनमेंसे कम कर देनेपर द्वितीय क्षेत्रका भागहार होता है।

तीन प्रदेश अधिक जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला जीव तृतीय क्षेत्रका स्वामी है। यहाँपर भी भागहारकी हानिको पहलेके समान ही करना चाहिये। विशेष इतना है कि अधस्तन विरलनका रूपाधिक तृतीय भाग उपरिम विरलनका भागहार होता है। इस प्रकार एक एक आकाश प्रदेशको बढ़ाकर जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण आकाशप्रदेशोंकी वृद्धि होनेतक ले जाना

चाहिये। यहाँ भागहार लानेकी विधि कहते हैं -- जघन्य परीतासंख्यातसे अपवर्तित रूपाधिक अधस्तन विरलन द्वारा उपरिम विरलनको अपवर्तित करके जो वहाँ उपलब्ध हो उसीमेंसे घटा देनेपर वहाँके क्षेत्रका भागहार होता है।

शंका -- इस प्रकार एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे प्रदेशोंके बढ़नेपर कितना अध्वान जानेपर उपरिम विरलनमें एक रूपकी हानि पायी जाती है?

समाधान -- रूप कम उपरिम विरलनसे जघन्य अवगाहनाको खण्डित करनेपर उसमेंसे एक खण्ड प्रमाण अजघन्य क्षेत्रके विकल्पोंके बीत जानेपर एक रूपकी हानि पायी जाती है। वह इस प्रकारसे -- रूप कम उपरिम विरलनको नीचे विरलित कर जघन्य क्षेत्रको समखण्ड करके देनेपर विरर‍लन रूपके प्रति वृद्धिरूप प्राप्त होते हैं। अब इनको ऊपर देखकर समकरण करते समय हीन रूपोंके प्रमाणको कहते हैं -- रूपाधिक अधस्तन विरलन राशिप्रमाण अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक रूप आता है। उसको उपरिम विरलनमें कम करनेपर वहाँके क्षेत्रविकल्पका भागहार होता है। इस प्रकार जाकर जघन्य अवगाहनाको जघन्य परीतासंख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड मात्र वृद्धि हो जानेपर भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है।

यहाँ समकरण करते समय हीन रूपोंके लानेके विधानको कहते हैं -- रूपाधिक जघन्य परीतासंख्यात मात्र अध्वान जाकर यदि एक रूपकी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर हीन रूपोंका प्रमाण आता है। उनको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर वहाँके जघन्य क्षेत्रस्थानका भागहार होता है। पुनः इस अवगाहनाके ऊपर एक प्रदेश अधिक क्रमसे बढ़कर स्थित जीव तदनन्तर उपरिम क्षेत्रका स्वामी होता है। यहाँ भी असंख्यातभागवृद्धि ही रहती है, क्योंकि, उत्कृष्ट संख्यातसे जघन्य अवगाहनाको खण्डित कर उसमें एक खण्ड मात्र प्रदेशोंकी वृद्धिका अभाव है। इस प्रकार जाकर जघन्य अवगाहनाको उत्कृष्ट संख्यातसे खण्डित करके उसमेंसे एक खण्ड मात्र जघन्य अवगाहनाके ऊपर वृद्धि हो चुकनेपर संख्यात भागवृद्धिकी आदि और असंख्यातभागवृद्धिकी समाप्ति हो जाती है।   >